सांगठनिक रिपोर्ट (अंश)

5- हमारी चुनौतियां

पिछले सम्मेलन के बाद से अब तक के पांच वर्षों में हमारे पार्टी संगठन ने मात्रात्मक वृद्धि हासिल की है। नहीं। इतना ही कहना पर्याप्त नहीं होगा। इन सालों में हम लोगों ने दो महत्वपूर्ण कार्यभारों को अंजाम दिया है। ये दोनों मजदूर वर्ग में पार्टी के काम से संबंधित हैं। इन सालों में हमने मजदूरों का एक जन संगठन लाँच किया है तथा एक मासिक मजदूर अखबार का प्रकाशन शुरू किया है। मजदूर वर्ग में पार्टी के काम को केन्द्रित करने के हमारे प्रयासों के मद्देनजर ये महत्वपूर्ण उपलब्धियां हैं।

लेकिन इन महत्वपूर्ण उपलब्धियों का होना ही हमारी सीमाओं और हमारे सामने मौजूद चुनौतियों को घनीभूत रूप से प्रस्तुत कर देता है। आखिर एक कम्युनिस्ट संगठन जो 29 सालों से अस्तित्वमान हो उसका मजदूरों में काम होना ही चाहिए, यही नहीं उसकी जड़ें प्रथमतः मजदूर वर्ग में ही होनी चाहिए, उसके नेतृत्व तले मजदूरों को संगठित होना चाहिए, उसके पास मजदूरों के लिए अखबार होना चाहिए इत्यादि। यही स्वाभाविक है। लेकिन हमारे पार्टी संगठन की त्रासदी यह है कि जो स्वाभाविक है वह हमारे लिए अस्वाभाविक बन गया था और उस स्वाभाविक की पुनर्स्थापना के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ रहा है। निश्चित तौर पर इसकी जड़ें हमारे इतिहास में हैं (जो अलग से सम्मेलन का एजेन्डा है)।

भारत के कम्युनिस्ट आंदोलन में 1950 के दशक में जो संशोधनवाद हावी हुआ उसका कुल परिणाम यह हुआ कि न केवल तब का कम्युनिस्ट आंदोलन पतित हो गया बल्कि उसका खामियाजा हम आज भी भुगत रहे हैं। नक्सलबाड़ी विद्रोह ने कम्युनिस्ट आंदोलन में क्रांति की स्पिरिट तो दोबारा स्थापित कर दी लेकिन संशोधनवाद की प्रतिक्रिया में यह जनता से अलग-थलग व्यक्तिगत आतंकवाद, संकीर्णतावाद, तथा हिरावलवाद का शिकार हो गया। कोढ़ में खाज यह कि चीनी क्रांति की अंधी नकल की प्रवृत्ति ने क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन को मजदूर वर्ग से दूर ढ़केल दिया। इस तरह भारत का कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन दोहरी बीमारी का शिकार हो गया : मजदूर वर्ग से कटाव तथा क्रांतिकारी जन दिशा का त्याग। कहने की बात नहीं कि यह आज भी हमारे ऊपर हावी है।

1978 में गठित हमारे पार्टी संगठन ने इस बीमारी से निजात पाना तो दूर उन्हें और घनीभूत रूप में अपना लिया। नक्सलबाड़ी से निकले बाकी संगठनों की तरह हम भी मजदूर वर्ग से दूर रहे। हमारी भी निगाहें गांव की तरफ ही थीं। उसमें यह और कि 1980-81 के आस-पास हमने सचेत तौर पर निर्णय लेकर अपने को देहाती बुनियादी वर्गो (देहाती सर्वहारा और गरीब किसान) से काट लिया। हमने अपने को देहाती व शहरी पेटी बुर्जुआ तक समेट लिया। जहां तक क्रांतिकारी जन दिशा का सवाल है, हमने व्यक्तिगत आतंकवाद की लाइन को त्याग दिया तथा औपचारिक तौर पर जन दिशा पर चलने की घोषणा कर दी। लेकिन जो अपनाया गया वह जन दिशा का विद्रूप भी नहीं था, वह जन से ही पलायन था। इस तरह हमारा पार्टी संगठन अन्य संगठनों से भी बुरी स्थिति में पहुंच गया। आठ-दस सालों में एक ऐसी व्यावहारिक लाइन अस्तित्व में आ गई जिसका मतलब था क्रांति की गलचौड़ करने वाले भीरु, सुविधापरस्त पेटी बुर्जुआ लोगों का सम्प्रदाय।

इस क्रांति विरोधी लाइन के खिलाफ संघर्ष खड़ा होना ही था और वह हुआ। लेकिन न तो वह स्पष्ट तरीके से हुआ और न ही स्वस्थ तरीके से। न ही प्रवृत्तियों के बीच विभाजक रेखा साफ थी। लगभग दस सालों में कई फूटों और विवादों के बाद अंततः हम लोग 1998 में एक अलग संगठन के रूप में अस्तित्व में आये।

लेकिन समूचे अतीत का बोझ हमारे ऊपर भी इतना ज्यादा था कि हम भी धीमे-धीमे और टटोलकर ही आगे बढ़ पाये। 1998 की फूट के करीब एक साल बाद ही हम इस नतीजे पर पहुंच सके कि हमें अपने कामों का गुरुत्व केन्द्र मजदूर वर्ग को बनाना चाहिए। इसी तरह जन दिशा, जन आंदोलन व जन संघर्ष की बात करते हुए भी हम मूलतः पुरानी कार्यशैली को दुहराते रहे।

ये सब बातें हमारे पार्टी इतिहास से संबंधित हैं। तब फिर उन्हें यहां सांगठनिक रिपोर्ट में हम क्यों कर रहे हैं? यह इसलिए कि ये बातें जिन समस्याओं से संबंधित हैं उनसे दो-चार हुए बिना अब हम आगे नहीं बढ़ सकते। ये हमारे सामने विशाल चुनौती बन कर खड़ी हो चुकी हैं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है पिछले पांच सालों में हमने मात्रात्मक विकास किया है, हम आगे बढ़े हैं। लेकिन इसके बावजूद यह भी सच है कि पिछले दो तीन सालों में हर कोई महसूस करने लगा है कि हमारे विकास की गति धीमी है, कि हम ठहराव के शिकार हो रहे हैं, कि कामों में उत्साह की कमी दिखती है, कि कहीं-कहीं पस्तहिम्मती

भी झलक रही है। क्या ये संकेत भ्रम मात्र हैं? नहीं, ये सच्चाई हैं। फिर? फिर क्या किया जाय? क्या इन्हें आज के गैर क्रांतिकारी समय का अनिवार्य परिणाम मानकर इस हालत से समझौता कर लिया जाय? या फिर इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए जद्दो-जहद की जाय?

निश्चय ही कम्युनिस्ट क्रांतिकारी बुरी स्थितियों के सामने आत्म समर्पण नहीं कर सकते। वे बुरी स्थितियों से जूझकर उन्हें अच्छी में रूपान्तरित कर देते हैं। हमें यही करना होगा।

आज हमारी प्रधान समस्या जन दिशा का सवाल है। यह साफ-साफ स्वीकार करने में हमें गुरेज नहीं होना चाहिए कि पिछले नौ-दस सालों में भी हम इस समस्या को जरा भी नहीं हल कर पाये हैं। बल्कि सही बात तो यह है कि यह हमारे एजेण्डे पर भी प्रमुखता से नहीं आ पायी है। इन सालों में केवल इतना भर हुआ है कि हमने बारंबार जन दिशा लागू करने की घोषणा की है। यह घोषणा हमारी चाहत को दिखाती है लेकिन एक क्रांतिकारी के लिए केवल चाहत ही पर्याप्त नहीं है।

यही नहीं, होता यह है कि जन दिशा के नाम पर हम उसी पुरानी कार्यशैली के शिकार हो जाते हैं जिसे छोड़ने की हम बार-बार कसमें खाते हैं। जैसा कि पहले कहा गया है पुरानी कार्यशैली सुविधापरस्त पेटी बुर्जुआ सम्प्रदाय के अनुरूप थी। उसमें समय-समय पर अभियान चलाकर नाम-पते इकट्ठे कर लिए जाते थे। फिर उनसे मिलकर दो-चार बार में छंटाई कर ली जाती थी। जो छंटकर बच जाते थे उन्हें किताबें पढ़ाकर, उनसे क्रांति की बातें कर, अध्ययन चक्र में बैठाकर अपने साथ जोड़ लिया जाता था। वे भी हमारी तरह कार्यकर्ता बन जाते थे और यही सब करने लगते थे। इस बीच देश, दुनिया, मजदूर वर्ग व बाकी जनता अपने रास्ते पर चलते रहते थे अपने सुखों-दुःखों व संघर्षों के साथ। हमारा सम्प्रदाय उनके बारे में बातें करता हुआ भी उनसे दूर रहता था। स्वाभाविक ही था कि ये बातें भी सतही होंगी। यह सम्प्रदाय वर्ग संघर्ष की ज्वालाओं से सुरक्षित था, इसीलिए राजकीय दमन से भी। स्वभावतः ही भीरुता और सुविधापरस्ती इसके चरित्र बन जाते। आत्म परिष्कार (तथाकथित व्यक्तित्वांतरण) इसका लक्ष्य बन जाता।

हमने इन सबसे नाता तोड़ने की कोशिश की। हमने मजदूर वर्ग व अन्य मेहनतकश जनता में जाने की घोषणा की। हमने जन आंदोलनों व जन संघर्षों में अपनी भागीदारी की प्रतिबद्धता घोषित की। हमने मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी लामबंदी का नारा बुलंद किया। स्वभावतः इन सबका मतलब था कि हम सही जन दिशा, क्रांतिकारी जन दिशा पर चल पड़ते।

लेकिन क्रांतिकारियों के लिए भी मानसिक जड़ता अक्सर बहुत भारी बोझ साबित हुयी है। और वह हमारे लिए भी साबित हुई। हम बातें एक करते रहे, व्यवहार दूसरा करते रहे। क्रांतिकारी जन दिशा की बात करते हुए हम सुविधापरस्त पेटी बुर्जुआ सम्प्रदाय की लाइन पर चलते रहे। परिणाम कई बार तो इतना बुरा हुआ कि हम पुरानी के सकारात्मक परिणाम से भी हाथ धो बैठे।

बात केवल इतनी ही नहीं कि हम व्यवहार में पुरानी लाइन पर चलते रहे हैं। अपनी समस्याओं के सैद्धान्तिक निरूपण में भी हम पीछे खिसक कर कई बार पुरानी लाइन पर पहुंच जाते रहे हैं। इक्के-दुक्के साथियों की समस्याओं से लेकर पूरे संगठन की समस्याओं से जूझते वक्त हमारी यह प्रवृत्ति रही है कि हम व्यक्तियों में समस्याओं को देखने लगते हैं, ज्यादा से ज्यादा कमेटियों में। समूचे पार्टी संगठन की राजनीतिक-सांगठनिक लाइन हमारी नजर से ओझल हो जाती है। इस तरह न चाहते हुए भी हम फिर व्यक्ति केन्द्रित, मनोविश्लेषणात्मक पद्यति तक पहुंच जाते रहे हैं। यह भी उसी जड़ता का परिणाम है।

कुल मिलाकर यह कि क्रांतिकारी जन-दिशा का सवाल हमारे सामने चुनौती के रूप में पेश है। यह वह यक्ष प्रश्न है जिसे हल करना ही होगा। इसके लिए सबसे पहले जरूरी यह है कि हम इसे एजेण्डे पर ले आयें।

क्रांतिकारी जन दिशा के कुछ आयामों पर गौर करना जरूरी है।

जन दिशा लागू करते वक्त रूप और अंतर्वस्तु के अंतर्विरोध में हमने रूप के भंवर में फंसने की गलती की है जिसके लिए विभिन्न कोणों से हमारी आलोचना भी हुयी है (ठीक-ठीक कहें तो यह औपचारिकतावाद की गलती है)। यह एक गलत प्रवृत्ति को ठीक करते हुए अपेक्षाकृत अतिरेक पर जाने की गलती तो है ही साथ ही जन दिशा की गलत समझदारी की अभिव्यक्ति भी। हमारे पार्टी संगठन की स्थापना के समय से इसमें अनौपचारिक कार्यशैली का बोलबाला था– पार्टी व जन संगठन दोनों स्तरों पर। इसने ढ़ेरों विकृतियों को जन्म दिया। हमने इसे ठीक करने की कसम खाई और पार्टी के औपचारिक ढ़ांचे के निर्माण के साथ-साथ औपचारिक जन संगठनों का निर्माण किया। इससे कई फायदे हुए जो हमने सोचे थे। लेकिन क्रांतिकारी जन दिशा विकसित न होने के चलते इसने तंत्र के रुटीन संचालन को ही, रुटीन गतिविधियों को ही जन कार्यवाहियों का स्थानापन्न बना दिया। जनता की क्रांतिकारी लामबंदी में लगे बिना हमारे

कार्यकर्ता व्यस्त हो गये। औपचारिक ढ़ांचे के तंत्र ने गति तो प्रदान की, लेकिन यह गति अपने आप में लक्ष्य हो गई। जन पत्रिका व जन अखबार नियमित बंटने लगे लेकिन वितरक व ग्राहक दोनों ने इन्हें पढ़ना बन्द कर दिया।

आज यह सच है कि हमारे तीनों जन संगठन स्वत: गतिमान हैं। ये पार्टी संगठन द्वारा निर्धारित सामान्य लाइन के तहत, सर्वोच्च कमेटी द्वारा नियुक्त प्रभारी के दिशा-निर्देशन में स्वत: गतिमान हैं। ये अपने कार्यक्रम तय करते हैं, लागू करते हैं और सार संकलन करते है; ये पर्चे-पुस्तिकाओं का प्रकाशन करते हैं, शिविरों का आयोजन करते हैं, ये कुछ जन आंदोलनों में भी भागीदारी करते हैं। परन्तु इनकी यह स्वत: गति बहुत कुछ स्वांत: सुखाय है, अपने आप में गति है। इससे कुछ कार्यकर्ता तो तैयार हो जाते हैं लेकिन व्यापक जनता की क्रांतिकारी गोलबंदी नहीं हो सकती।

जन संगठनों का तंत्र तथा तंत्र का संचालन यदि अपने आप में लक्ष्य बना रहता है, यदि इसकी गति को ही जन दिशा का क्रियान्वयन मानना जारी रहता है तो रूप अंतर्वस्तु पर हावी रहेगा, जन दिशा अंतर्वस्तु में लागू नहीं हो पायेगी। रूप व अंतर्वस्तु के इस अंतर्विरोध में अंतर्वस्तु को प्रधानता देनी ही होगी तब तो और भी जब हमने रूप का निर्माण कर लिया हो और उसके संचालन का एक मेकेनिज्म विकसित कर लिया हो। कहने की जरूरत नहीं कि अंतर्वस्तु के विकास के साथ रूप और उसका संचालन गुणात्मक तौर पर बदल जायेंगे।

रूप और अंतर्वस्तु का यह अंतर्विरोध रचनात्मकता के सवाल पर भी अपने आप को अभिव्यक्त करता है। यह स्पष्ट ही है कि रचनात्मकता का स्रोत जनता है और इसीलिए अपनी अंतर्वस्तु में यह जन दिशा को सही तरह से लागू करने में है। लेकिन रचनात्मकता के अंतर्वस्तु वाले पहलू को आंख से ओझल कर दिया जाय तो फिर सारी रचनात्मकता रूप की रचनात्मकता बच जाती है। चूंकि कोई भी रूप कुछ समय बाद ही पुराना और बासी हो जाता है इसलिए रूप की रचनात्मक दौड़ अंतहीन जारी रहती है। यह न केवल निरर्थक है बल्कि घातक भी क्योंकि यह अंतर्वस्तु के स्तर पर रचनात्मता से ध्यान हटाती है। इसका मतलब यह नहीं कि रूप की रचनात्मकता को दरकिनार किया जाय लेकिन प्रधानता अंतर्वस्तु को ही दी जानी चाहिए। यहां यह ध्यान रखना जरूरी है कि नयी अंतर्वस्तु नये रूप के साथ उत्पन्न होती है या फिर जल्दी ही नया रूप ग्रहण कर लेती है। रूसी क्रांति में उत्पन्न सोवियतें अंतर्वस्तु और रूप दोनों में नयी थीं।

जन दिशा लागू करने में संकीर्णतावाद भी हमारी प्रमुख समस्या है। जैसा कि पहले कहा गया है कि हम सुविधापरस्त पेटी बुर्जुआ सम्प्रदाय की लाइन से अपना पिण्ड छुड़ाने का सालों से प्रयत्न कर रहे हैं। संकीर्णतावाद ('संप्रदायवाद') इस लाइन की अनिवार्य विशेषता है। हम आज भी इसके शिकार हैं। पवित्रतावाद से लेकर अपने आप को एक दायरे में बन्द रखने जैसी चीजें इसको हिस्सा हैं। हम जन संगठनों तक में सदस्यों के भविष्य में मृत हो जाने के भय से सदस्यता नहीं देते। हम तब तक इंतजार करते हैं जब तक वह हमारे अनुरूप न बन जाय। यही बात विभिन्न स्तरों पर साथियों की भर्ती के बारे में भी है। न्यूनतम मानदंडों के पूरा होते ही लोगों को तुरत-फुरत भर्ती और जिम्मेदारियां सौंप कर लोगों का विकास जैसी चीजें हमारे लिए पराई हैं। हम गति और परिवर्तन में नहीं, स्थिरता और स्थायित्व में विश्वास करते हैं। हमारे लिए स्थायित्व गति और परिवर्तन का परिणाम नहीं बल्कि अपने आप में मूल्यवान चीज है।

संकीर्णतावाद और पवित्रतावाद की यह प्रवृत्ति हमारे आंतरिक और वाह्य दोनों ही रिश्तों में जड़ जमाये बैठी है। किसी भी संप्रदाय या पंथ की यह विशेषता होती है कि वह अपने लिए निश्चित कुछ नियमों-कानूनों और आचार-व्यवहार के हिसाब से गठित होता है और दृढ़तापूर्वक उससे विचलन का विरोध करता है। स्वयं इन नियमों-कानूनों व आचार-व्यवहार की यह विशेषता होती है कि ये केवल कुछ निश्चित तरह के व्यक्तियों पर ही लागू हो सकते हैं या उन्हीं द्वारा अमल में लाये जा सकते हैं। व्यापक जनता की वस्तुगत जरूरतों व इच्छाओं-आकांक्षाओं से ये बेमेल ही नहीं होते बल्कि व्यापक जनता इनके लिए अनुपयुक्त होती है। वह इनके लिए अपवित्र होती है जिससे पंथ की रक्षा की जानी चाहिए। व्यापक जनता की अधम स्थिति व अपवित्रता पंथ के लिए सबसे बड़ा खतरा होती है। इस तरह पंथ व्यापक जनता से सचेत तौर पर कटा हुआ स्वांत: सुखाय संस्था बन जाता है।

पंथ की यह संकीर्णता व पवित्रता हमारे भीतर भी जड़ जमाए बैठी है। हमारे पार्टी संगठन ही नहीं, जन संगठनों के सदस्यों के मापदंडों तथा व्यवहार में, विभिन्न स्तरों पर व्यक्तियों के आकलन व उन्नयन में यह प्रतिबिंबित होती है। हम न केवल 'अपवित्र' व्यक्तियों के अपने भीतर प्रवेश से भयभीत रहते हैं बल्कि हमने समूचा ढ़ांचा ही इसी के हिसाब से बना रखा है। सभी स्तरों पर हमारे मापदंड इसी हिसाब से बने हुए हैं। इस स्थिति को बदलने की आवश्यकता है। वर्तमान प्रस्तावित संविधान इसको ध्यान में रख कर बनाया गया है। हमें अपनी पवित्रता के क्षरण से भयभीत होने के बदले यह दृष्टिकोण अपनाना चाहिए कि हमें क्रांति के लिए व्यापक मजदूर-मेहनतकश जनता को लामबंद करना है तथा इसके लिए हम 'अपवित्र' व्यक्तियों को भी अपने भीतर समेट कर उन्हें क्रांति की जरूरतों के अनुरूप मापदंडों के हिसाब से ढ़ाल लेंगे।

अपनी जन कार्यवाहियों में भी हमें पंथ की इस संकीर्णता व पवित्रतावाद की प्रवृत्ति से मुक्त होना चाहिए। क्रांति के लिए व्यापक मजदूर-मेहनतकश जनता की गोलबंदी को कमान में रख कर हमें सारी गतिविधियां संचालित करनी चाहिए। इसी से निर्देशित होते हुए हमें जन कार्यवाही के एक रूप के तौर पर विभिन्न स्तरों पर चुनावों में भागीदारी से भी परहेज नहीं करना चाहिए। छात्र संघों, स्थानीय निकायों, विधान सभाओं व लोक सभा के चुनावों में भागीदारी करते समय हमारा मापदंड यही होना चाहिए कि यह कार्यवाही क्रांति के लिए कितनी लाभदायक होगी। पूंजीवादी व्यवस्था का भंडाफोड़ कर लोगों की उसके मोहपाश से मुक्ति, व्यापक जनता में हमारी पहुंच का विस्तार, हमारे जन संगठनों व पार्टी संगठन को होने वाली सांगठनिक प्राप्तियां इत्यादि इसको तय करने के लिए मापदंड होंगे। निश्चय ही चुनावी राजनीति के सभी भ्रष्टकारी प्रभाव के प्रति हमें सचेत रहना होगा।

सही क्रांतिकारी जन दिशा के अभाव में हावी संकीर्णतावाद अपने आप को अपने विपरीत में भी अभिव्यक्त करता है। जनता जुटाने के चक्कर में हम कई बार दूसरे छोर पर भी चले जाते हैं। संकीर्णतावाद अपने विपरीत यानी लोकप्रियतावाद में बदल जाता है।

जनता के साथ जुड़ने की चाहत, अपने साथ जनता को लाने की चाहत ने हमारे बीच जन आधार के नारे को भी बुलंद किया है। जन आधार का नारा सही है। लेकिन सवाल यह है कि कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन का जन आधार कैसा हो? क्या यह कुछ नेताओं पर आधारित जन आधार हो या फिर व्यापक कार्यकर्ताओं पर आधारित। यानी क्या जन आधार के लिए कार्यकर्ता आधार भी विकसित किया जा रहा है या केवल कुछ नेता तैयार हो रहे हैं। यह सवाल अपने आप को क्रांतिकारी जन दिशा और बुर्जुआ जन दिशा के रूप में पेश कर देता है।

कम्युनिस्टों के लिए कम्युनिस्ट पार्टी से इतर, उससे जुड़े जन आधार से इतर किसी भी तरह की बात बेमानी है। इसीलिए कम्युनिस्टों के लिए नेता आधारित जन आधार की बात सोची भी नहीं जा सकती।

जन दिशा की समस्या को हल करते वक्त हमें दो बातों का और ध्यान रखना होगा। आज भारतीय समाज में तेज उथल-पुथल है। कई पुरानी चीजें तिरोहित हो रही हैं तथा कई नई पैदा हो रही हैं। पुराना जाना पहचाना होता है और इसलिए उसके साथ जीना आसान होता है। नया हमेशा असुविधाजनक होता है। हमें सचेत तौर पर अपने को नये पर आधारित करना होगा, पुराने का मोह छोड़ना होगा। समाज में नयी उभरती प्रवृत्तियों पर आधारित जन दिशा ही सही क्रांतिकारी जन दिशा बन सकती है।

दूसरी बात यह कि पूंजीपति वर्ग की निजीकरण-उदारीकरण-वैश्वीकरण की नीति देश में वैसे लागू नहीं हुई जैसे इसके शुरूआती संकेत थे। इसने भांति-भांति के रास्ते ग्रहण किये, भांति-भांति के तरीके अपनाए। इसके परिणाम विभिन्न रूपों में सामने आ भी चुके हैं लेकिन इनके खिलाफ हमारा प्रचार या इसके परिणामों से हमारे लिए निकलने वाली दिशा वैसी नहीं है, जैसी होनी चाहिए। परिणाम यह निकलता है कि अमूर्तता में सही होते हुए भी हमारे प्रचार व संघर्ष ठोस रूप में कारगर नहीं हो पाते। इस दिशा में हमें बहुत कुछ करना होगा।

हमें समूची पार्टी के स्तर पर ही क्रांतिकारी जन दिशा लागू करने के लिए जूझना है। लेकिन यह विभिन्न जन संगठनों के स्तर पर एक तरह से ही लागू नहीं होगी। विभिन्न जन संगठनों की प्रकृति के हिसाब से इसमें फर्क होगा। पार्टी के स्तर पर आम चीज विभिन्न विशिष्ट संगठनों के स्तर पर विशिष्ट स्वरूप ग्रहण कर लेगी। पार्टी की आम क्रांतिकारी जन दिशा इन विशिष्ट रूपों में ही अभिव्यक्त होगी। आम और विशिष्ट के इस संबंध को यदि अनदेखा किया जाता है तो कोई क्रांतिकारी जन दिशा लागू नहीं की जा सकेगी। या तो आम विशिष्ट पर हावी होकर संकीर्णतावाद व हिरावलवाद को जन्म देगा। या फिर विशिष्ट आम पर हावी होकर सुधारवाद और अर्थवाद को।

सही क्रांतिकारी जन दिशा लागू करने में हमारी अतीत की जड़ता ही हमारे लिए बाधा नहीं है बल्कि हमारी मनोगतवादी अधिभूतवादी चिंतन पद्धति भी इसके रास्ते में एक बड़ी बाधा है। यह पद्धति हमारे ऊपर इस कदर हावी है कि स्वयं द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का अध्ययन भी सूत्रों को कंठस्थ करना बन जाता है। इस पद्धति से छुटकारा पाने के लिए सचेत संघर्ष करना होगा। ऐसा न होने पर हर नारा एक मृत नारा तथा हर कार्यक्रम एक अनुष्ठान बनने के लिए पहले से ही अभिशप्त होगा।

क्रांतिकारी जन दिशा को लागू करने के लिए और इसके वास्ते पार्टी को तैयार करने के लिए कुछ व्यावहारिक चीजें करनी होंगी :

♦ हर स्तर पर नये साथियों को जिम्मेदारी सौंपी जाय। उन्हें जिम्मेदारी सौंपने के जरिये उनका विकास किया जाय। इसके लिए नये साथियों पर भरोसा किया जाय।

♦ हर स्तर पर नये साथियों की शिक्षा-दीक्षा और प्रशिक्षण के काम को गंभीरता से लिया जाय। प्रशिक्षण के अभाव का बहाना बनाकर उन्हें जिम्मेदारी न सौंपने की प्रवृत्ति से छुटकारा पाया जाय।

♦ विभिन्न स्तरों पर साथियों के पीछे हट जाने या काबिल न साबित होने से न डरा जाय।

♦ हर स्तर पर नये साथियों और नये विचारों का प्रोत्साहित किया जाय।

♦ हर स्तर पर छोटी कमेटियां बनाई जायें। इससे न केवल संचालन में सुविधा होती है बल्कि नये साथियों को विकास करने का भी मौका मिलता है।

♦ पुराने जड़ लोगों की छंटनी करने से संकोच न किया जाय।

♦ क्रांतिकारी जन दिशा का एक अहम पहलू यह है कि जिन वर्गों (व स्थानों) में हम कार्य कर रहे हैं, वहां सक्रिय (तात्कालिक और दीर्घकालिक) अंतर्विरोधों की पहचान करना, उन मुद्दों को समझना और सामने लाना जो जनता को उद्वेलित कर सकते हैं और जिन पर वह जागृत, सक्रिय, संगठित व आंदोलित हो सकती है। जनता के साथ गहरे सम्पर्क, उसके जीवन के साथ एकाकार होने, समस्याओं पर गहराई से विचार करने, सही वक्त पर सही मुद्दे उठाने, मुद्दों की पहचान कर उनके इर्द-गिर्द प्रचार व गोलबंदी करने, नये व अस्पष्ट मुद्दों की मार्क्सवाद के अनुरूप जीवन्त, सटीक व सही समय पर व्याख्या करने जैसी कार्यवाहियों से यह संभव हो सकेगा कि हम अपनी तरफ से बेजान व जनता की अरुचि के विषयों के इर्द-गिर्द के निरर्थक प्रयास के स्थान पर वास्तविक मुद्दों को उठा सकेंगे।

उपरोक्त बातों की रोशनी में आज हमारे कामों की आम दिशा यह होनी चाहिए : हम मार्क्सवाद के आम सिद्धान्तों के अध्ययन, विभिन्न क्रांतियों के अध्ययन, वर्तमान देश-दुनिया की स्थिति के विश्लेषण को अपने संगठन के ठोस व्यवहार द्वारा प्राप्त अनुभव से मिलाएं और उस क्रांतिकारी दिशा का निर्धारण करें जिस पर चल कर व्यापक मजदूर-मेहनतकश आबादी को हम क्रांति के लिए लामबंद कर सकें। इसी पर चलकर हम अपने संगठन का विस्तार कर सकते हैं, उसका रूपान्तरण कर सकते हैं और देश में एक अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के पुनर्गठन में योगदान दे सकते हैं क्योंकि बिना इस दिशा निर्धारण के संगठनों के बीच मौजूद मतभेदों का हल होना और एकता होना असंभव है। यदि इस बीच क्रांतिकारी उभार हमारी मदद करता है तो वह भी इसी कारण कि यह हमारी दिशा को निर्धारित करना आसान बना देगा और साथ ही इस पर आपसी सहमति भी।

आज हमारे पास मौजूद सिद्धान्तों (समाजवादी क्रांति के आम सिद्धान्त, कार्यक्रम व रणनीति) के आधार मात्र पर खड़े होकर न हम अपने संगठन का विकास कर सकते हैं और न हम अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के पुनर्गठन में सार्थक योगदान कर सकते हैं।

....

■■■